Vol 6 Issue 10 July 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | JULY - 2017

स्वामी विवेकानन्द के साहित्य में निहित सामाजिक चेतना सम्बन्धी विचार

डॉ. मुरलीधर मिश्रा
एसोशिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

सारांश

इस शोधपत्र में जाति, नारी उत्थान, जन शिक्षण, समाजवाद, सामाजिक एकता, जन–जागरण, कर्मशीलता से विकास जैसे शीर्षकों के अन्तर्गत स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक चेतना से सम्बन्धित विचारों पर प्रकाश डाला गया है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार जाति के प्रश्न को हल करने के लिए किसी उच्च को नीचे गिराना, और खान–पान में अपनी मर्यादा को लांघने देना नहीं है, बल्कि नीचतम परियों तक सबको ब्राह्मण बनाने का प्रयत्न करना है। उनकी अवधारणा में जाति स्थायी नहीं वरन् गत्यात्मक होने के कारण सभी के पास ब्राह्मण बनने का अवसर है। नारी की बौद्धिक उन्नति के साथ–साथ आध्यात्मिक और नीतिमत्ता की उन्नति आवश्यक है। इनके अनुसार एक चरित्रवान जीवनयापन करते हुए नारी अपने पवित्र आचार–विचार और हृदय की पवित्रता के माध्यम से आध्यात्म के सहारे मानव–कल्याण के पथ पर अगसर हो सकती है। स्वामी विवेकानंद का जाति को एक गत्यात्मक सत्य मानना, नारी के उत्थान की आवश्यकता पर बल देना, जन शिक्षण को महत्व देना, वास्तविक समाजवाद की अवधारणा को स्पष्ट करना, सामाजिक एकता पर बल देना, जनता से जागृत रहने का आह्वान, कर्मशीलता से विकास तथा मन के विकास और संयमन पर जोर देना आदि सामाजिक चेतना सम्बन्धी विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने पहले कभी हुआ करते थे। वर्तमान में सुप्तसम भारतीय समाज को जगाने के लिए निसंदेह अनेक विवेकानन्द चाहिए।

प्रयुक्त शब्दावली: जाति, नारी उत्थान, जन शिक्षण, समाजवाद, सामाजिक एकता, जन–जागरण, कर्मशीलता .

प्रस्तावना

'वसुधैव कुटुंबकम्' की संकल्पना ने पूरे विश्व को एक श्रृंखला में निबद्ध करने का प्रयास किया है। संपूर्ण विश्व में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने स्वामी विवेकानन्द का नाम नहीं सुना हो। आधुनिक भारत में इनका उल्लेख युवा पुरुष के रूप में किया जाता है। स्वामी विवेकानन्द का लक्ष्य समाज सेवा, जनशिक्षा, धार्मिक पुनरूत्थान और समाज में जागरुकता लाना, मानव की सेवा आदि था। जनचिंतन से सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए स्वामी जी का चिंतन अत्यन्त मौलिक एवं प्रेरक है। स्वामी विवेकानंद के जाति के सम्बन्ध में विचारों, नारी उत्थान के प्रति चिंतन, जन शिक्षण का प्रसार, वास्तविक समाजवाद की अवधारणा, सामाजिक एकता, जन–जागरण की आवश्यकता तथा कर्मशीलता सम्बन्धी विचारों ने जन मन को प्रभावित किया है और इनमें आज भी जनसाधारण को अभिप्ररित करने का अनुपम सामर्थ्य है। जाति एक गत्यात्मक सत्य, नारी उत्थान, जन शिक्षण, समाजवाद, सामाजिक एकता, जन–जागरण, कर्मशीलता से विकास जैसे शीर्षकों के अन्तर्गत स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक चेतना से सम्बन्धित विचारों पर प्रकाश डालना इस पत्र का हेतु है।

1.जाति एक गत्यात्मक सत्य

भारतीय समाज जातियों में बंटा हुआ समाज है। जातियों में बंटे होने के कारण समाज को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए समय–समय पर जाति विहीन सर्वसमाज की माँग उठती रही है। जाति के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानंद के अपने अनुभव थे। उन्होंने स्वयं लिखा है–'मुझे नीच जाति वालों के प्रति उच्च जाति वालों के अत्याचारों के कैसे–कैसे अनुभव मिले हैं। क्या वह धर्म है, जो गरीबों के दुःख दूर नहीं कर सकता? क्या तुम समझते हो कि हमारा धर्म, धर्म कहलाने लायक है? हमारा धर्म तो केवल 'छुओ मत' में है। जिस देश में लाखों मनुष्य महुए के फूल से पेट भरते हैं, जहाँ दस–बीस लाख साधु और दस–एक करोड़ ब्राह्मण इन गरीबों का रक्त चूसते हैं, पर उनके सुधार का रत्ती भर भी प्रयास नहीं करते, वह धर्म है या शैतान का नग्न नृत्य? ..तुम जानते नहीं कि अत्याचार और गुलामी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।' इससे स्पष्ट है कि वे जाति संघर्ष के विरोधी थे। उन्होंने खुद ही लिखा है कि –'मुझे इस बात का खेद है कि वर्तमान काल में जातियों के बीच इतना विरोध है।' जातियों के बीच संघर्ष के विरोधी होने पर केवल विरोध के लिए विरोध करना उन्हें मंजूर नहीं था। प्राचीन भारतीय परम्परागत चिंतन में प्रत्येक व्यक्ति के पास ब्राह्मणत्व प्राप्त करने का अवसर रहा है। इस भारतीय चिंतन में उनकी विवेकपूर्ण आस्था

थी। इसलिए उनका आदर्श ब्राह्मण ही था या यों कहें ब्राह्मण उनके लिए एक जाति नहीं बल्कि एक साध्य थी, एक ऐसा साध्य जो सबकी पहुँच में हो। वे कहते हैं––'भारत की यही योजना है कि प्रत्येक व्यक्ति को ब्राह्मण बनाया जाये, क्योंकि ब्राह्मण ही मानवता का आदर्श है।' वे ब्राह्मण को नीचे गिराने के समर्थक नहीं थे, बल्कि नीचे के लोगों को ब्राह्मण बनाना चाहते थे, जो मुश्किल भले ही हो लेकिन असम्भव नहीं। उन्होंने कहा–जाति के प्रश्न को हल करने के लिए हमें किसी उच्च को नीचे गिराना, और खान–पान में अपनी मर्यादा को लांघने देना नहीं है, बल्कि नीचतम परियों तक सबको ब्राह्मण बनाने का प्रयत्न करना है। उनकी अवधारणा में जाति स्थायी नहीं वरन् गत्यात्मक है, सभी के पास ब्राह्मण बनने का अवसर है।

2. नारी उत्थान

न्यूयार्क में भाषण देते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि जब तक कोई समाज स्त्री–पुरुष के भेद को भुलाकर प्रत्येक मानव में मानवता का दर्शन नहीं करता और यह नहीं सोचता कि स्त्री–पुरुष दोनों एक–दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं, तब तक वहाँ की स्त्रियों का वास्तविक रूप से उत्थान नहीं हो सकता। मात्र बौद्धिक और अक्षर ज्ञान से ही स्त्रियों का का कल्याण संभव नहीं है। अपितु स्त्रियों को बौद्धिक और अक्षर ज्ञान के साथ–साथ उनकी आध्यात्मकिता और नीतिमत्ता की उन्नति भी अत्यंत आवश्यक है। भारत की नारियाँ भले ही बौद्धिक और अक्षर ज्ञान के स्तर पर अमेरिका की नारियों से पीछे हो परंतु वे सदैव अपने शील की रक्षा के साथ–साथ एक चरित्रवान जीवनयापन करते हुए अपने पवित्र आचार–विचार और हृदय की पवित्रता के माध्यम से आध्यात्म के सहारे मानव–कल्याण के पथ पर अग्रेसित होती हैं। स्वामी विवेकानन्द ने अपने भाषण में वहाँ के प्रेमाचार के विषय पर कहा कि अगर वे विवाहेच्छुक होते तो अमेरिका के अन्य नवयुवकों की भाँति सैकड़ों बार प्रेमाचार के आडम्बर की तुलना में बिना किसी आडम्बर के किसी एक के प्रियपात्र बन चुके होते हैं। अमेरिका में बढते तलाकों की संख्या पर चिंतित होकर उन्होंने अमेरिकियों को बताया कि भारतीय समाज में यह सर्व–शिक्षा दी जाती है कि प्रत्येक स्त्री–पुरुष अपने पति–पत्नी के अलावा अन्य सभी को मातृवत–पुत्रवत की नजर से देखे। अमेरिका में स्त्री भोगवादी मानसिकता के केन्द्र–बिन्दु में वास करती है परंतु भारत में स्त्री सदैव से पूज्या रही है। इसी भारतीय–चिंतन के चलते भारत में तलाकों की संख्या अमेरिका के अपेक्षाकृत नगण्य है। इसप्रकार स्वामी विवेकानन्द ने नारी की बौद्धिक उन्नति के साथ–साथ उनकी आध्यात्मकिता और नीतिमत्ता की उन्नति को भी अत्यंत आवश्यक बताया। इनके अनुसार एक चरित्रवान जीवनयापन करते हुए नारी अपने पवित्र आचार–विचार और हृदय की पवित्रता के माध्यम से आध्यात्म के सहारे मानव–कल्याण के पथ पर अगसर हो सकती है।

3. जन शिक्षण

किसी भी देश की उन्नति में वहाँ के शिक्षित–प्रतिशत की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। क्योंकि देश की उन्नति का अनुपात और जन–समुदाय के शिक्षित का अनुपात सदैव परस्पर निर्भर होते हैं। भारतवर्ष के पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण यह भी है कि कुछ चन्द लोगों ने शिक्षा पर अपना आधिपत्य जमा रखा है। गाँवों में शिक्षा–रूपी दीपक का प्रकाश अभी भी धूमिल ही है। अतः यदि किसी अभाववश विद्यालय में विद्यार्थी न पहुँच पाये तो विद्यालय को स्वयं उन अभावग्रस्त विद्यार्थियों के पास पहुँचकर उनकी मातृभाषा में ही शिक्षा देनी चाहिये। इसके साथ– साथ जन शिक्षा में संस्कृत जैसी उत्कृष्ट भाषा का स्थान विशिष्ट होना चाहिये। संस्कृत भाषा मात्र वेदों–उपनिषदों की भाषा बनकर न रहकर जाय। 'विशेष परिश्रम के साथ संस्कृत सीखो। शत्रु को पराजित करने के लिए ढाल तथा तलवार की आवश्यकता होती है। इसलिए अंग्रेज़ी और संस्कृत का अध्ययन मन लगाकर करो।' जन शिक्षा के प्रचार–प्रसार की नितांत आवश्यकता है क्योंकि शिक्षा पर केवल ब्राह्मण विशेष का अधिकार न होकर अपितु सभी सभी लोगों का समान अधिकार है। शिक्षा का अंतिम लक्ष्य यही है कि वह व्यक्ति को खुद का मालिक बनाये परिणामतः वह सदैव एक मालिक की तरह कार्य करता रहे न कि किसी भी प्रकार से गुलाम की तरह।

4. समाजवाद

यूरोप में विकसित हो रहे पूंजीवाद की दुष्प्रकृति निराश तथा रूस के क्रांतिकारी विचारक प्रिंस क्रोपोटिलिन के विचारों से प्रभावित स्वामी विवेकानंद ने लिखा है, 'मैं समाजवादी हूँ, इसलिए नहीं कि मैं इसे पूर्ण रूप से निर्दोष व्यवस्था समझता हूं, बल्कि इसलिए कि आधी रोटी अच्छी है, कुछ नहीं से।' स्वामी विवेकानंद की पुस्तक 'जाति, संस्कृति और समाजवाद' से पता चलता है कि उनका समाजवाद, समाजवाद के नाम पर इस देश में राजनीति करने वालों से बिल्कुल भिन्न था। उनके समाजवाद में नर ही नारायण है। इनके हृदय में गरीबों एवं पददलितों के प्रति असीम संवेदना थी। उन्होंने कहा, 'राष्ट्र का गौरव महलों में सुरक्षित नहीं रह सकता, झोंपड़ियों की दशा भी सुधारनी होगी। गरीबों यानी दरिद्रनारायण को उनके दीन हीन स्तर से ऊंचा उठाना होगा। यदि गरीबों एवं शूद्रों को दीन हीन रखा गया तो देश और समाज का कोई कल्याण नहीं हो सकता है।' विवेकानंद के समाजवादी अन्तरात्मा ने चीत्कार कर कहा, 'मैं उस भगवान या धर्म पर विश्वास नहीं कर सकता जो न तो विधवाओं के आंसू पोंछ सकता है और न तो अनाथों के मुंह में एक टुकड़ा रोटी ही पहुंचा सकता है।'

वास्तव में विवेकानंद ने एक भविष्यद्रष्टा की भांति यह देख लिया था कि किसी न किसी रूप में समाजवाद निकट आ ही रहा है और वह दिन दूर नहीं जब शूद्रों के रूप में शूद्र शासन वर्ग बन जाएंगे। विवेकानंद के अनुसार, पहले तीन वर्णों का शासन हो चुका है और अब शूद्र राज्य (दलित राज्य) का युग आ गया है। वे (शूद्र) अवश्य राज्य करेंगे उन्हें कोई नहीं रोक सकता है। विवेकानंद में श्रमिक वर्ग के प्रति जबरदस्त सहानुभूति थी। अपनी मातृभूमि के भविष्य के लिए न केवल स्वतंत्रता की, वरन् समाजवाद की भविष्यवाणी की। वास्तव में इस अविस्मरणीय व्यक्ति ने भारत में समाजवाद का नारा रूस के समाजवादी क्रांति (1917 ई.) के दो दशक पूर्व ही दे दिया था। सफल समाजवाद के लिए उनका दर्शन कितना उच्च कौटि का था इसका पता विवेकानंद के इस कथन से मिलता है जिसमें आध्यात्मिक विचार धारा को समाजवादी विचारों की पूर्व आवश्यकता माना 'हमें देश में समाजवादी विचारों की बाढ़ लाने से पहले यहां आध्यात्मिक विचारों की धारा प्रवाहित करनी चाहिए।'

5.सामाजिक एकता

विवेकानन्द ने तथाकथित भिन्न धर्मों के बीच अन्तर्निहित एकत्व को पहचाना तथा उसका प्रतिपादन किया। मनुष्य और मनुष्य की एकता ही नहीं अपितु जीव मात्र की एकता का प्रतिपादन किया। पूरे विश्व में एक ही सत्ता है। एक ही शक्ति है। उस एक सत्ता, एक शक्ति को जब अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है तो व्यक्ति को विभिन्न धर्मों, पंथों, सम्प्रदायों, आचरण–पद्धतियों की प्रतीतियाँ होती हैं। अपने–अपने मत को व्यक्त करने के लिए अभिव्यक्ति की विशिष्ट शैलियाँ विकसित हो जाती हैं। अलग–अलग मत अपनी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करने लगते हैं। अपने विशिष्ट ध्वज, विशिष्ट चिह्न, विशिष्ट प्रतीक बना लेते हैं। इन्हीं कारणों से वे भिन्न–भिन्न नजर आने लगते हैं।

स्वामी जी के अनुसार आत्मानुसंधान की यात्रा में व्यक्ति तत्त्वतः एकाकी नहीं रह जाता। उसके लिए सृष्टि का प्रत्येक प्राणी आत्मतुल्य हो जाता है। एक की पहचान सबकी पहचान हो जाती है तथा सबकी पहचान से वह अपने को पहचान लेता है। भाषा के धरातल पर भले ही इसमें विरोधाभास नज़र आये लेकिन अध्यात्म के धरातल पर इसमें परिपूर्णता है। धर्म का अभिप्राय व्यक्ति के चित्त का शुद्धीकरण है, जहाँ पिण्ड में ही ब्रह्माण्ड है। समस्त प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव, प्रेमभाव तथा समभाव होना ही धर्म है। सबके साथ मेल से रहो। अहंकार के सब भाव छोड़ दो और साम्प्रदायिक विचारों को मन में न लाओ। व्यर्थ विवाद महापाप है। यह स्वामी विवेकानन्द का मानवमात्र को अदभुत संदेश है।

6. जन–जागरण

विवेकानंद को जनसाधारण की शक्ति में अटूट विश्वास था। वे इस बात को भांप गए थे कि सामान्य जनता में जब तक जागृति का संचार नहीं होगा तब तक समाज में घोर विषमता व्याप्त रहेगी और उच्च वर्ग निर्धनों का शोषण अविरल करते रहेंगे। निष्ठुर पूंजीपतियों और जमींदारों को उन्होंने खुली चेतावनी देते हुए कहा था, 'जब जन साधारण जाग उठेगा तो वह तुम्हारे द्वारा किए गए दमन को समझ जाएगा और उनके दारुण दुःखों की एक आह तुम्हें पूर्णरूपेण नष्ट कर देगी।'

विवेकानंद समाजवाद के लिए वर्ग क्रांति नहीं, धर्म क्रांति के पक्षधर थे। विवेकानंद का विश्वास न तो कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद में था और न ही मार्क्स के अनुयायियों की तरह वह वर्ग संघर्ष में विश्वास करते थे। वह मानते थे कि वेदांत पर आधारित सामाजिक दर्शन में वर्ग संघर्ष का कोई स्थान नहीं है। भारत के जाति व्यवस्था का विरोध करते हुए भी वे आदि काल के वर्ण व्यवस्था के पक्षधर थे। वो चाहते थे कि निम्न वर्ग को उच्च वर्ग तक उठने का अवसर मिले– यही वेदांत का मूल संदेश है।

स्वामी विवेकानंद जी का मानना था कि भारत में किसी भी सुधार के लिए सबसे पहले धर्म में एक क्रांति लाना आवश्यक है। विवेकानन्द ने व्यावहारिक दृष्टि से भारत की जनता को सचेत करते हुए निष्कपटता, चारित्रिक बल और मानसिक दृढ़ता विकसित करने हेतु सचेत किया। उनका दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि 'सभी मरेंगे– साधु या असाधु, धनी या दरिद्र सभी मरेंगे। चिर काल तक किसी का शरीर नहीं रहेगा। अतएव उठो, जागो और संपूर्ण रूप से निष्कपट हो जाओ। भारत में घोर कपट समा गया है।.....चरित्र का ऐसा बल और मन की ऐसी दृढ़ता चाहिए जिससे मनुष्य आजीवन दृढ़व्रती बन सके।'

7. कर्मशीलता से विकास

तात्कालीन भारतीय समाज में फैली मानसिक एवं आध्यात्मिक निराशा के माहौल में स्वामी विवेकानंद ने व्यावहारिक जीवन की समस्याओं का समाधान करने तथा समसामयिक दृष्टि से पराधीन भारत के सुषुप्त मानस में आत्म गौरव एवं आत्म विश्वास का मंत्र फूँककर उनको निरन्तर कर्म–पथ पर आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया, 'उठो, जागो, और जब तक ध्येय की प्राप्ति नहीं हो जाती, तब तक रुको मत"।

विवेकानंद के अनुसार कर्म–पथ पर आगे बढ़ा जाय या नहीं यह विवाद का विषय नहीं है। इसलिए उन्होंने बिल्कुल स्पष्ट कहा कि 'वाद–विवाद की, शास्त्रार्थ की जरूरत नहीं है। जरूरत है– कर्मपथ पर आगे बढ़ने की, बढ़ते जाने की।' सामूहिक रूप से कर्म करने पर बल देते हुए स्वामी जी ने कहा कि 'तुम लोग कमर कसकर कार्य में जुट जाओ, हुंकार मात्र से हम दुनिया को पलट देंगे। अभी तो केवल मात्र प्रारम्भ ही है। किसी के साथ विवाद न करो। मिल–जुलकर आगे बढ़ो।'

'जो केवल अपने ही उद्धार में लगे हुए हैं, वे न तो अपना उद्धार कर सकेंगे और न दूसरों का।.....कुछ लोग ऐसे हैं जो केवल दूसरों की त्रुटियों को देखने के लिए तैयार बैठे रहते हैं। जब कार्य करने का समय आता है तो उनका पता नहीं चलता। तुम काम में जुट जाओ। अपनी शक्ति के अनुसार आगे बढ़ो।'

साधना पथ में कभी–कभी बाधाएँ आती हैं। मन डाँवाडोल हो जाता है। विवेकानन्द ऐसे साधकों को प्रबुद्ध करते हुए उन्होंने कहा कि 'किसी बात से तुम उदास एवं निराश मत होओ। जीवन के अंतिम क्षण तक डरो मत। सिंह की शूरता और पुष्प की कोमलता के सदृश्य काम करते रहो।'

साधना पथ की बाधाओं में मानसिक दृढ़ता की आवश्यकता की पुरजोर वकालत करते हुए उन्होंने निन्दा, धना भाव और कल क्या होगा इसकी परवाह न करने, विघ्नों को कल्याण का रास्ता बताते हुए न्यायपथ से कभी विचलित न होने व अच्छे कर्मों में लगातार लगे रहने के लिए प्रेरित किया तथा कहा कि'लोग चाहे तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्मी तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहान्त आज हो या एक युग के बाद; इन सबसे निर्लिप्त तुम न्यायपथ से कभी विचलित न हो"।.....अच्छे कर्मों में कितने ही विघ्न आते हैं। विघ्नों के बीच ही कल्याण का रास्ता भी निकलता है। कोई संशय मत पालो। कोई चिन्ता न करो। शत्रुओं से मत घबराओ। अपना काम करते जाओ"।..... वीरता से आगे बढो। एक दिन या एक साल में सिद्धि की आशा न रखो। उच्चतम आदर्श पर दृढ़ रहो। स्थिर रहो। स्वार्थपरता और ईर्ष्या से बचो। आज्ञा–पालन करो। सत्य, मनुष्य–जाति और अपने देश के पक्ष पर सदा के लिए अटल रहो। व्यक्ति और उसका जीवन ही शक्ति का स्रोत है। इसके सिवाय अन्य कुछ भी नहीं।' लोगों द्वारा निन्दा करने, धना भाव होने, कार्य में विघ्न आने पर व्यक्ति को सर्वाधिक आवश्यकता मानसिक दृढ़ता की आवश्यकता होती है। इसीलिए स्वामी विवेकानन्द ने मानसिक दृढ़ता की पुरजोर वकालत करते हुए इसे कल्याण का

रास्ता बताया तथा धैर्य रखते हुए न्यायपथ से कभी विचलित न होने व अच्छे कर्मों में लगातार लगे रहने के लिए जनसामान्य को अभिप्रेरित किया।

8. मन का विकास और संयमन

अधिकांश व्यक्तियों की असफलता के पीछे विवेकानन्द ने एकाग्रता की कमी, निन्दा से प्रभावित होने, धैर्य की कमी को प्रभावी कारक माना एवं स्पष्ट शब्दों में एकाग्रता बनाये रखने, निन्दा से प्रभावित न होने तथा धैर्य रखने का संदेश दिया, उनका साफ संदेष था कि 'लोगों या समाज की बातों पर ध्यान न देकर, एकाग्र मन से अपना कार्य करते रहो। क्या तुमने नहीं सुना। कबीरदास का दोहा है– 'हाथी चले बाजार में, कुत्ता भोंके हजार। साधुन को दुर्भाव नहिं, जो निन्दे संसार'। हम सबको भी ऐसे ही चलना है। दुनिया के लोगों की बातों पर ध्यान नहीं देना होगा। उनकी भली बुरी बातों को सुनने से जीवन में किसी प्रकार का महान कार्य करना सम्भव न होगा"।.....'मन का विकास करो और उसका संयम करो, उसके बाद जहाँ इच्छा हो, वहाँ इसका प्रयोग करो उससे अति शीघ्र फल प्राप्ति होगी। यह है यथार्थ आत्मोन्नति का उपाय। एकाग्रता सीखो, और जिस ओर इच्छा हो, उसका प्रयोग करो। ऐसा करने पर तुम्हें कुछ खोना नहीं पड़ेगा।'

इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द के विचार निराश, मायूस, हताश, भग्नाश व्यक्ति व समाज के मन में आशा, विश्वास एवं उत्साह के भाव–वपन करती है, उसमें अदम्य साहस पैदा करती है तथा साधनविहीन होते हुए भी अपने लक्ष्य को पाने के लिए आगे बढ़ने की अजेय प्रेरणा प्रदान करती है। यह कहा जा सकता है कि विवेकानन्द के कारण गुलामी की जंजीरों से जकड़े भारत को आत्म–आस्था के प्रदीप के आलोक में अपनी स्वतंत्रता–प्राप्ति के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए रास्ता मिला तथा उस रास्ते पर कदम बढ़ाने के लिए अपार सामाजिक चेतना प्राप्त हुई है। निष्कर्षतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि स्वामी विवेकानंद का जाति को एक गत्यात्मक सत्य मानना, नारी के उत्थान की आवश्यकता पर बल देना, जन शिक्षण को महत्व देना, वास्तविक समाजवाद की अवधारणा को स्पष्ट करना, सामाजिक एकता पर बल देना, जनता से जागृत रहने का आह्वान, कर्मशीलता से विकास तथा मन के विकास और संयमन पर जोर देना आदि सामाजिक चेतना सम्बन्धी विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने पहले कभी हुआ करते थे। वर्तमान में सुप्तसम भारतीय समाज को जगाने के लिए निसंदेह अनेक विवेकानन्द चाहिए।

सन्दर्भ–

Banhatti, G.S. (1995), Life and Philosophy of Swami Vivekananda, Atlantic Publishers & Distributors, p. 276, ISBN 978-81-7156-291-6.

Gokhale, B. G. (January 1964), "Swami Vivekananda and Indian Nationalism",Journal of Bible and Religion (Oxford University Press) 32 (1): 35–42.

Gosling, David L. (2007). Science and the Indian Tradition: When Einstein Met Tagore. Routledge. ISBN 978-1-134-14333-7.

Gupta, N.L. (2003), Swami Vivekananda, Delhi: Anmol Publications, ISBN 978-81-261-1538-9.

Kashyap, Shivendra (2012), Saving Humanity: Swami Vivekanand Perspective, Vivekanand Swadhyay Mandal, ISBN 978-81-923019-0-7.

Kraemer, Hendrik (1960), "Cultural response of Hindu India", World cultures and world religions, London: Westminster Press, ASIN B0007DLYAK.

Nikhilananda, Swami (1953), Vivekananda: A Biography, New York: Ramakrishna-Vivekananda Center, ISBN 0-911206-25-6, retrieved 19 March 2012.

Paranjape, Makarand R. (2012). Making India: Colonialism, National Culture, and the Afterlife of Indian English Authority. Springer. ISBN 978-94-007-4661-9.

Ritananda, Swami (2013). "Swami Vivekananda: The personification of Spirituality". Swami Vivekananda: New Perspectives An Anthology on Swami Vivekananda. Ramakrishna Mission Institute of Culture. ISBN 978-93-81325-23-0.

Rolland, Romain (2008), The Life of Vivekananda and the Universal Gospel(24 ed.), Advaita Ashrama, p. 328, ISBN 978-81-85301-01-3.

Sen, Amiya (2003), Gupta, Narayani, ed., Swami Vivekananda, New Delhi: Oxford University Press, ISBN 0-19-564565-0.

Virajananda, Swami, ed. (2006) [1910], The Life of the swami Vivekananda by his eastern and western disciples... in two volumes (Sixth ed.), Kolkata: Advaita Ashrama, ISBN 81-7505-044-6.

Vivekananda, Swami (1976). Meditation and Its Methods According to Swami Vivekananda. Vedanta Press. ISBN 978-0-87481-030-1.

Vivekananda, Swami (2001) [1907], Complete Works of Swami Vivekananda, 9 Volumes, Advaita Ashrama, ISBN 978-81-85301-75-4.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com